IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed ( Group -I) Journal Volume 10, Iss 01, 2021

# सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

**डॉ. ममता बंसल, एसोसिएट प्रोफेसर, सूरतगढ़ बी.एड. कॉलेज, सूरतगढ़, जिला श्रीगंगानगर (राज.)**

**सारांषः–**

मानव अधिकारों को इस रूप में देखा जा सकता है कि यह मानव की गरिमा को पल्लवित करने तथा भविष्य में मानव अधिकार संस्कृति को विकसित करने का प्रयास है। इनमे कि मानव सभ्यता का सुरक्षित रखा जा सकेगा। इसके लिए व्यक्ति, समाज तथा राज्य को सकारात्मक एवं रचनात्मक प्रयास करना होगा।

प्रस्तुत शोध में प्रष्नावली के माध्यम से सरकारी व गैर सरकारी संगठन के सदस्यों को मानवाधिकार के प्रति जागरूकता की जांच की गई है तथ्यों के विष्लेषण से सरकारी व गैर सरकारी संगठन के सदस्यो ंकी मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

**प्रस्तावनाः–**

विष्व के विकसित एवं सभ्य राष्ट्रों की आधारषिला मानव अधिकार है। इन अधिकारों व अभाव में मानव अपना स्वतंत्र चिन्तन नहीं कर सकता और बिना स्वतंत्र चिन्तन के मानव कल्याणकारी योजनाएँ नहीं बना सकता। विष्व के प्रत्येक मानव की यह प्रबल आकांक्षा होती है कि उसको मानवाधिकार प्राप्त हो। इस हेतु जनजागृति फैलाने के लिए प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस के रूप में विष्व भर में मनाया जाता है।

मानव अधिकार शब्द के ही सुस्पष्टता है कि मानव होने के कारण प्राप्त अधिकार व्यक्ति को जन्मजात कुछ अधिकार जो जीवन जीने, सर्वांगीण व अन्तर्निहित उन्नति के लिए आवष्यक है। दूसरे शब्दों में –सम्मानपूर्वक जीवन जीने के अधिकार, मानव के लिए वे स्वीकृत सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व पर्यावरणीय हालात, जो मनुष्य के विकास के लिए आवष्यक है। इन अधिकारों को प्राप्त एवं उपयोग करने हेतु विषेष योग्यता, विषेषता या परिस्थितियों की आष्यकता नहीं होती है। मानव में अन्तर्निहित क्षमताओं–योग्यताओं को विकसित करने योग्य परिस्थितियों की उपलब्धि ही मानव अधिकार है।

**समस्या कथनः–**

''सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन''

**शोध की आवष्यकता एवं महत्व :–**

आज विष्व के प्रत्येक देष में मानवधिकारों का हनन हो रहा है। जिसमें ज्यादातर अफ्रीका व एषिया के राष्ट्रों में मानवधिकारो ंकी खुलकर धज्जियां उड़ाई जा रही है। इन

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed ( Group -I) Journal Volume 10, Iss 01, 2021

देषों के लोगों में इतनी असमानता बढ़ गई है कि एक व्यक्ति को खाने के लिए भोजन एवं पहनने के लिए कपड़े नहीं है तो दूसरे के पास इतना धन है कि रखने के लिए जगह नहीं है। भारत में जिसका प्रत्यक्ष प्रणाम सी.बी.आई. द्वारा अनेक स्थानों पर मारे गए छापों के दौरान मिलने वाला काला धन है। यह हम सभी को सोचने के लिए विवष करता है कि क्या हमें भ्रष्टाचार फैलाने की ही स्वतन्त्रता है ? क्या विकास की गति पर्याप्त है ? क्या हमने अधिकारो ंको प्राप्त कर लिया है ? क्या षिक्षा का स्तर विकसित राष्ट्रों की षिक्षा के समान है ? क्या हम अधिकारो ंके साथ अपना कर्तव्य निभा रहें है ?

इन सभी प्रष्ना ंका उत्तर शायद नकारात्मक ही मिलेगा तो इनको प्राप्त करने में हमारा क्या योगदान हो सकता है ? आज यह सब हर कोई महसूस कर रहा है, लेकिन समाधान के लिए आगे नहीं आ पाता है। अतः आज आवष्यकता इस बात की है कि सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन आगे आकर इन समस्याओं के समाधान के लिए एकजुट होकर आवष्यक कदम उठायें। इन सभी समस्याओं को दूर करने के लिए षिक्षाविदों पर यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी आ गई है कि संगठित होकर मानवाधिकारों को प्राप्त करने के लिए कार्य करें। कहा जाता है कि संगठन में शक्ति होती है तो संगठित होकर कार्य करके हम अपने उद्देष्यों को प्राप्त कर सकते है।

**उद्देष्य :–**

1. सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
2. सरकारी व गैर सरकारी संगठन के महिला वर्ग की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
3. सरकारी व गैर सरकारी संगठन के पुरूष वर्ग की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

**परिकल्पनाएँ :–**

1. सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी व गैर सरकारी संगठन के महिला वर्ग की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सरकारी व गैर सरकारी संगठन के पुरूष वर्ग की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध विधि :–**

प्रस्तुत शोध के लिए अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

**न्यादर्ष :–**

न्यादर्ष संपूर्ण जनसंख्या का एक अंष होता है। न्यादर्ष का तात्पर्य संपूर्ण से अध्ययन के लिए ऐसी इकाई को पृथक करना है, जो संपूर्ण का प्रतिनिधित्व

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, 

करती है। न्यादर्ष, प्रविधि, शोधकार्य को व्यावहारिक बनाती है तथा इसे समय, धन व शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है।

## न्यादर्ष का वर्गवार वितरण

| क्र0 स0 | वर्ग | संगठन | | योग |
|---|---|---|---|---|
| | | सरकारी | गैर सरकारी | |
| 1 | महिला | 15 | 15 | 30 |
| 2 | पुरूष | 15 | 15 | 30 |
| | योग | 30 | 30 | 60 |

**शोध अध्ययन के उपकरणः–**

सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है।

**सांख्यिकी प्रविधियाँः–**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान
2. मानक–विचलन
3. टी–मूल्य

**विष्लेषण :–**

सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता

सारणी संख्या –1

| क्र0 स0 | संगठन | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सरकारी संगठन | 30 | 15.00 | 3.405 | 0.94 | 0.531 | स्वीकृत |
| 2 | गैर–सरकारी संगठन | 30 | 14.50 | 3.927 | | | |

स्तर 0.01 = 2.66 स्तर 0.05 = 2.00

उपरोक्त तालिका के विष्लेषण से ज्ञात होता है कि सरकारी व गैर सरकारी संगठन के सदस्यो के मध्यमान क्रमषः 15.00 तथा 14.50 है तथा मानक विचलन क्रमषः 3.405 तथा 3. 927 है। गणना से प्राप्त टी मूल्य 0.531 स्वतन्त्रता के अंष 58 के अनुसार 0.05 स्तर पर 2. 00 से कम प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता

सारणी संख्या –2

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed ( Group -I) Journal Volume 10, Iss 01, 2021

| क्र0 स0 | संगठन | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सरकारी संगठन | 15 | 14.80 | 3.762 | 1.432 | 0.139 | स्वीकृत |
| 2 | गैर–सरकारी संगठन | 15 | 14.60 | 4.077 | | | |

स्तर 0.01 = 2.76 स्तर 0.05 = 2.05

उपरोक्त तालिका के विष्लेषण से ज्ञात होता है कि सरकारी व गैर सरकारी संगठन की महिला वर्ग के मध्यमान क्रमषः 14.80 तथा 14.60 है तथा मानक विचलन क्रमषः 3.762 तथा 4.077 है। गणना से प्राप्त टी मूल्य 0.139 स्वतन्त्रता के अंष 28 के अनुसार 0.05 स्तर पर 2.05 से कम प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता

सारणी संख्या –3

| क्र0 स0 | संगठन | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सरकारी संगठन | 15 | 15.20 | 3.186 | 1.274 | 0.627 | स्वीकृत |
| 2 | गैर–सरकारी संगठन | 15 | 14.40 | 3.774 | | | |

स्तर 0.01 = 2.76 स्तर 0.05 = 2.05

उपरोक्त तालिका के विष्लेषण से ज्ञात होता है कि सरकारी व गैर सरकारी संगठन की पुरूष वर्ग के मध्यमान क्रमषः 15.20 तथा 14.40 है तथा मानक विचलन क्रमषः 3.186 तथा 3.977 है। गणना से प्राप्त टी मूल्य 0.627 स्वतन्त्रता के अंष 28 के अनुसार 0.05 स्तर पर 2.05 से कम प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

अतः स्पष्ट है कि सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः इस आधार पर यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

**शोध निष्कर्ष :–**

प्रस्तुत शोध से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैः–

1. सरकारी व गैर सरकारी संगठन की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी व गैर सरकारी संगठन की महिला वर्ग की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed ( Group -I) Journal Volume 10, Iss 01, 2021

3. सरकारी व गैर सरकारी संगठन के पुरूष वर्ग की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–**


1. फड़िया बी.एल (2001) – '' अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'' साहित्य भवन पब्लिकेषन्स आगरा
2. बाबेल, बसंती लाल (1997) – ''मानवाधिकार सैन्ट्रल लॉ एजेन्सी'' इलाहाबाद
3. मलिक, बी.एन. (2001) – ''फिलेासेाफिकल फॉर दी पॉलिटिक्स'' ज्ञान प्रकाषन आगरा
4. फड़िया बी.एल (2001) – '' अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'' साहित्य भवन पब्लिकेषन्स आगरा
5. वार्कर अनेस्ट सिद्धांत'' (1971) – ''सामाजिक तथा राजनीतिकषास्त्र के हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ़
6. वीरेन्द्र प्रकाष शर्मा – '' मानवाधिकार और षिक्षा '' राजस्थान प्रकाषन, जयपुर
7. बजाज – ''मानवाधिकार का मानवीय पत्र की संवेदना से संबंध''